जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – जनवरी 2024 ।। अंक – 42 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

समूह से तय किया सशक्तीकरण का सफर (पृष्ठ – 02)

समूह से मिला ऋण तो गीता बनी व्यवसायी (पृष्ठ – 03)

कौशल विकास और रोजगारपरक गतिविधियों से युवा बन रहे आत्मनिर्भर (पृष्ठ – 04)

समाज के अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवा पहुंचा रही हैं जीविका दीदियाँ

कल तक घरों कि दहलीज को लांघने में झिझकने वाली महिलाएँ आज आत्मविश्वास के साथ लोगों के स्वास्थ्य एवं पोषण को बेहतर बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं। आज वह ऐसे स्वास्थ्य उपकरणों को सफलता पूर्वक संचालित कर रही हैं जो कल तक उनके लिए एक सपना होता था। ऐसा संभव हो पाया जीविका के प्रयास से। जीविका द्वारा जिले कि चयनित समूह की दीदियों को प्रशिक्षित कर उन्हें इस काबिल बना दिया कि अब वे स्वास्थ्य जाँच जैसी गतिविधियों में संलग्न हैं। बिहार के 4400 सामुयदायिक पोषण संसाधन सेवियों (सीएनआरपी) को हेल्थ किट के उपयोग पर आवासीय प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया गया है। प्रशिक्षण के दौरान सीएनआरपी को हेल्थ किट से शुगर, ब्लड प्रेशर, वजन आदि की जांच के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। इन प्रशिक्षणों के बाद 4400 से ज्यादा सामुयदायिक पोषण संसाधन सेवियों को बीपी मशीन, इंफेंटोमीटर, स्टेडीयोमीटर, वजन तौलने की मशीन आदि जीविका द्वारा उपलब्ध करवाया गया है। प्रशिक्षित सीएनआरपी द्वारा जीविका दीदियों, उनके बच्चों एवं लक्षित क्षेत्र के ग्रामीणों के स्वास्थ्य की जांच कर रही हैं।

क्या है सामुयदायिक पोषण संसाधन सेवी (सी.एन.आर.पी.)

सामुयदायिक पोषण संसाधन सेवी जीविका की एक सामुयदायिक संवर्ग (कैडर) हैं, जिनका चयन उनकी योग्यता के आधार पर सामुदायिक संगठनों द्वारा किया जाता है। सीएनआरपी अपने लक्षित क्षेत्र में जीविका दीदियों और उनके परिजनों को स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं और उन्हें जागरूक करती हैं। एक पंचायत में एक सी.एन.आर.पी. कार्यरत होती है। वर्तमान समय में राज्य के विभिन्न जिलों के पंचायतों में 4400 से ज्यादा सीएनआरपी कार्यरत हैं। इन सीएनआरपी दीदियों को उनके कार्य के एवज में मानदेय दिया जाता है।

कौन–कौन सा स्वास्थ्य उपकरण मिला सीएनआरपी को

सभी सी.एन.आर.पी. को विभिन्न स्वास्थ्य उपकरण उपलब्ध करवाया गया है। स्वास्थ्य उपकरणों में डिजिटल बीपी मशीन, डिजिटल थरमामीटर, बेबी वेयिंग (वजन तौलने) मशीन, वेयिंग मशीन फॉर एडल्ट, इंफेंटोमीटर, स्टीरियो मीटर, इंच टेप एवं ग्लूकोमीटर आदि प्रमुख है। सभी मशीनों का उपयोग सी.एन.आर.पी. दीदियों द्वारा खुद किया जाता है। वहीं ग्लूकोमीटर का उपयोग डॉक्टर, नर्स या सीएचओ के मार्गदर्शन में एवं उनके समक्ष करती है। इन उपकरणों के रख–रखाव कि जिम्मेदारी भी सीएनआरपी की है। सीएनआरपी द्वारा यंत्रों के उपयोग के लिए लाभार्थियों से मामूली शुल्क लिया जाता है जैसे वजन के लिए 2 रुपया, ब्लड प्रेशर के लिए 5 रूपया आदि।

सीएनआरपी के कार्य

स्वास्थ्य उपकरण के संचालन के प्रशिक्षण के बाद सी.एन.आर.पी. दीदियाँ अपने लक्षित क्षेत्रों में जीविका दीदियों एवं उनके परिजनों के साथ–साथ आम लोगों को जहाँ स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता से संबंधित जानकारियों से अवगत कराती हैं, वहीं आवश्यकतानुसार रक्तचाप की माप, ऊँचाई के हिसाब से वजन की माप भी करती हैं। सी.एन.आर.पी. दीदियों द्वारा खानपान, गर्भावस्था के पूर्व, दौरान एवं बाद कि जाँच, 5 खाद्य समूह आदि के बारे में भी जानकारी दी जाती है। जाँच के बाद आवश्यकता होने पर सी.एन.आर.पी. द्वारा संबंधित व्यक्तियों या दीदियों को स्वास्थ्य केंद्र जाने के लिए भी प्रेरित किया जाता है। वर्तमान में पुरे बिहार में कुल 3194 सी.एन.आर.पी. कार्यरत है।

क्या कहती हैं सी.एन.आर.पी.

बेगूसराय जिला के साहेबपुर कमाल प्रखंड की सामुयदायिक पोषण संसाधन सेवी (सी.एन.आर.पी.) लवली कहती हैं कि उनके लिए सी.एन.आर.पी. रूप में काम करना बहुत बड़ी बात है। मैंने इसके बारे में कभी सोचा नहीं था। आज, जिले भर की महिलाएँ मुझे पहचानती हैं और मुझे बहुत अच्छा लगता है जब वे मुझे सुनती हैं और मेरी कही बातों का पालन करती हैं। जीविका ने महिलाओं के बीच एक–दूसरे से सीखने की परम्परा को बढ़ावा दिया है, जिसका बेहतर परिणाम हमारे सामने है। स्वास्थ्य उपकरणों के संचालन से हमारे आत्मविश्वास में और ज्यादा बढ़ोत्तरी हुई है। इस प्रशिक्षण से हमलोगों को काफी लाभ हुआ है।'

रिंकु ने संघर्ष से पाई सफलता

बेगूसराय जिला के शाम्हो प्रखंड के बिजुलिया गाँव की रहने वाली हैं रिंकु देवी। रिंकु देवी वर्ष 2014 में जीविका समूह से जुड़ी। समूह से जुड़ने के पूर्व पति की किसानी से होने वाली अल्प आमदनी एवं उनके सिलाई–कटाई के कार्य से होने वाली अमदनी से भी उनके परिवार का रहन–सहन काफी मुश्किल से हो पाता था। जीविका में जुड़ाव के बाद रिंकु दीदी के जीवन में बदलाव की शुरूआत हुई। आर्थिक कठिनाई के बीच रिंकु समूह में पंचसूत्र का पालन कठिनाईपूर्वक कर पाती थीं। कई बार बचत करने एवं अन्य कार्यों में कठिनाई होती थी लेकिन रिंकु ने सबका सामना अपनी हिम्मत से किया।

रिंकु कहती हैं कि–'कठिनाईयों के बीच मेरे मन में कुछ नया करने का विचार आने लगा। काफी सोचने–विचारने के बाद मैंने घर पर ही श्रृंगार दुकान खोलने का मन बनाया। समस्या थी तो सिर्फ पूंजी की। मैंने अपने विचारों से समूह के सदस्यों को अवगत कराया। सभी ने मुझे 15 हजार रूपये ऋण देने पर अपनी सहमति जतायी। मुझे अपने व्यवसाय के पूंजी के लिए 15 हजार रूपये का ऋण प्राप्त हुया। मैंने इन पैसों से अपने घर में श्रृंगार की एक छोटी सी दुकान को प्रारंभ कर लिया। दुकान का संचालन मैं खुद करती हूँ। कभी–कभी मेरे पति भी सहयोग प्रदान करते हैं।'

रिंकु मुस्कुराते हुए कहती हैं कि–'अब मेरे पास आय के तीन साधन हैं। एक तो पति की किसानी, दूसरी मेरी दुकानदारी और तीसरी मेरी सिलाई–कटाई का कार्य। तीनों मिलाकर अब ठीक–ठाक आमदनी होने लगी।' वह बताती हैं कि मेरे मुहल्ले में लगभग 100 परिवार हैं। इन परिवारों के साथ–साथ मुझे जीविका दीदियों का सहयोग भी मेरे व्यवसाय के संचालन में मिलता है। अभी वर्तमान में दीदी की मासिक आमदनी लगभग 15 हजार रूपया है।

समूह से तय किया सशक्तीकरण का सफर

आधी आबादी आज प्रगति की नई मिसाल बन चुकी हैं। अपने जीवन की आधी उम्र गुजार चुकी महिलाएँ अब अपने पुत्र–पुत्री को स्वावलंबन की राह दिखा रही हैं। खुद से मेहनत करते हुए स्वयं सहायता समूहों के सहयोग से अपना और अपने पुत्र–पुत्री और बहु का भी भविष्य उज्ज्वल कर रही हैं। उन्हीं महिलाओं में से एक हैं लखीसराय जिला अंतर्गत लखीसराय प्रखंड स्थित महिसोना गाँव की श्रीमती सविता देवी। सविता देवी बताती है कि बेटे के पान की दुकान से पूरे परिवार का गुजारा मुश्किल था। लिहाजा वह परिवार की आर्थिक तंगी दूर करने के लिए खुद भी व्यवसाय करना चाहती थीं। समूह की शक्ति और गाँव की महिलाओं के सहयोग से वह छठ जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई। बेटा से ही दस रूपया लेकर उन्होंने समूह में बचत करना शुरू किया। इस बीच उनके बेटे की भी शादी हो गयी। अपने पति पुत्र और समूह की महिलाओं से सलाह लेकर उन्होंने समूह से 40 हजार रूपया ऋण लेकर सीमेंट, गिट्टी, छड़ का व्यवसाय शुरू किया। समूह से लिए गए ऋण को चुकाकर उन्होंने फिर से दुकान को बड़ा स्वरुप देने के लिए समूह से 50 हजार रूपया ऋण लिया। धीरे–धीरे इनके दुकान ने बड़ा आकार ले लिया। मुनाफे की राशि से उन्होंने ऋण की राशि लौटा दी। सविता देवी को दुकान संचालन में उनकी बहु भी मदद करती हैं। सास–बहु मिलकर दुकान से प्रतिमाह 20 से 22 हजार रूपया मुनाफा कमा रही हैं।

अपने गाँव–पंचायत में सशक्त और स्वावलंबी महिला की मिसाल हैं श्रीमती सविता देवी। आज सविता देवी अपने पुत्र और पुत्र वधु को सुनहरे भविष्य को ओर ले जाने वाली एक मां के रूप में जिम्मेवार महिला की बानगी भी पेश कर रही हैं।

समूह से मिला ऋण तो गीता बनी व्यवसायी

गीता देवी नवादा जिला के पकरीबरावां प्रखंड अंतर्गत पकरीबरावां उतर पंचायत के बड़ी तालाब, पकरीबरावां गाँव की है। उनके परिवार में इनके पति के अलावा दो बेटा और एक बेटी हैं। उनके परिवार के पास खेती हेतु अपना जमीन नहीं है। उनके पति भाड़े का टेम्पो चलाकर अपने परिवार का भरण–पोषण करते थे। गीता देवी कुछ रोजगार करना चाहती थी पर पूँजी के अभाव के कारण वह नहीं कर पा रही थी।

वर्ष 2020 में वह अंजली जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई। उन्हें समूह का कोषाध्यक्ष बनाया गया। वह समूह के नियमित साप्ताहिक बैठक में भाग लेकर 10 रुपये बचत करने लगी। समूह के गतिविधियों में भाग लेने लगी। कुछ माह बाद मनिहारी दुकान खोलने के लिए समूह से 50,000 रुपये ऋण ली।

ऋण मिलने के बाद पकरीबरावां बाजार में किराये पर दुकान लेकर मनिहारी की दुकान चलाने लगी। दुकान में अच्छी बिक्री होने लगी। परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए वर्ष 2022 में गीता अपने दुकान के पास पति के लिए कपड़े की दुकान खुलवायी। इस दुकान में निवेश करने के लिए उन्होंने पुन: समूह से 50,000 रुपये का ऋण लिया।

अंजली समूह से नियमित ऋण का लेन–देन करती हैं। अब तक वह समूह से कई बार में 1,40,000 रुपये ऋण लिया है। जिसे ब्याज सहित वापस कर रही हैं। गीता देवी की मनिहारी और कपड़ा दुकान से कुल मिलाकर मासिक आय लगभग 15,000 रुपये हो जाती है। जिससे परिवार का भरण–पोषण और बच्चों को शिक्षा बेहतर तरीके से हो रही है।

गीता देवी कहती हैं कि जीविका समूह से सबसे सस्ता ऋण मिलता है वह भी बिना कोई परेशानी के। वह कहती हैं कि रोजगार में समूह से काफी सहयोग मिला है, जिसके कारण उनकी स्थिति में बदलाव हुआ है।

गायत्री के हौसलों से मिली उन्हें नई उड़ान

गायत्री प्रजापति भागलपुर के गोराडीह प्रखंड अन्तर्गत मुरहन जमीन गांव की एक सामान्य लड़की है। लेकिन उन्होंने चेन्नई जैसे महानगर में स्थित एक बड़े रिटेल कंपनी में काम किया है। दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत गायत्री ने प्रशिक्षण और रोजगार प्राप्त किया। इससे वह आत्मनिर्भर बनी है। आत्मनिर्भर बनने के साथ–साथ उनके रहन–सहन, सोच–विचार और बातचीत के तरीके में भी बदलाव आया है। गायत्री के जीवन में यह बदलाव जीविका द्वारा क्रियान्वित दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना की वजह से हुआ है। गायत्री ने वर्ष 2017 में मैट्रिक और 2020 में इंटर पास कर ली थी। अच्छे अंक से परीक्षा उत्तीर्णता के बाद वह सुनहरे भविष्य का सपना देख रही थी। लेकिन घर की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण उनकी राह कठिनाई आ रही थी। इसी बीच जीविका ने उनके कैरियर का मार्ग प्रशस्त किया। गायत्री ने दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना का लाभ लेकर 'रिटेल एंड सेल्स ट्रेड' में प्रशिक्षण प्राप्त किया। गायत्री ने बांका जिला स्थित प्रशिक्षण संस्थान में 4 माह का आवासीय प्रशिक्षण एवं 2 माह तक ऑन जॉब ट्रेनिंग प्राप्त किया। इसके बाद उन्हें चेन्नई स्थित एक रिटेल कंपनी में रोजगार का अवसर प्राप्त हुआ। यहां उन्हें 14 हजार रुपये प्रति माह के साथ अन्य सुविधाएं मिलती थी।

गायत्री ने वहां तकरीबन 6 माह तक काम किया। इसी बीच वह स्नातक की पढ़ाई पूर्ण करना चाहती थी ताकि वह जीवन में आगे बढ़ सके। इस सोच के साथ वह घर लौटा आई। लेकिन उन्होंने अपने कदम पीछे नहीं खींचे। वर्तमान में वह भागलपुर में एक प्रतिष्ठित रिटेल चेन के शॉपिंग मॉल में बिलिंग काउंटर का जिम्मा संभालती है। इससे उन्हें 12 हजार रुपये प्रति माह का वेतन मिलता है। इससे वह अपनी पढ़ाई के खर्च का वहन कर रही है। गायत्री कहती है कि वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनी है। उनके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हुई है। अब वह हर चुनौतियों का सामना डटकर करना सीख गई है।

कौशल विकास और रोजगारपरक गतिविधियों से युवा बन रहे आत्मनिर्भर

बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में जीविका स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को संगठित और आर्थिक रूप से सशक्त किया जा रहा है। साथ ही साथ समूह से जुड़े ग्रामीण परिवारों के बेरोजगार युवक–युवतियों का भविष्य संवारने हेतु भी जीविका द्वारा अनके प्रकार के प्रयास किये जा रहे हैं। इसके तहत ग्रामीण क्षेत्र के युवक–युवतियों का कौशल विकास करने के उपरांत उन्हें रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। कौशल विकास एवं रोजगार कार्यक्रम के तहत निम्न प्रकार के कार्य किये जा रहे हैं–

1. दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्र के युवक–युवतियों को विभिन्न विधाओं में नि:शुल्क आवासीय प्रशिक्षण उपलब्ध कराये जाते हैं। इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण संस्थान कार्यरत है। इन संस्थानों के माध्यम से युवाओं को विभिन्न विधाओं में तीन से 6 माह का आवासीय प्रशिक्षण एवं 2 से 3 माह का ऑन जॉब ट्रेनिंग दिये जाने के उपरान्त उन्हें संगठित क्षेत्र की कंपनियों में रोजगार उपलब्ध कराये जाते हैं। इस योजना के तहत युवाओं के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट के बाद भी उन्हें निरंतर मदद की जाती है, जिससे वे रोजगार की दिशा में स्थायी रूप से कदम बढ़ा सकें।

2. जिले के विभिन्न प्रखंडों या सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार मेले का आयोजन कर ऐसे क्षेत्रों के युवाओं को कौशल विकास एवं सीधा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। रोजगार मेले में 10 से 12 या इससे भी अधिक संख्या में नियोक्ता कंपनियां एवं प्रशिक्षण संस्थान अपना स्टॉल लगाते हैं और युवाओं का पंजीकरण कर उन्हें सीधे रोजगार से जोड़ते हैं। रोजगार मेले का आयोजन ऐसे सुदूरवर्ती क्षेत्र के युवाओं के लिए वरदान साबित हो रहा है, जिनके समक्ष रोजगार की तलाश हेतु अब तक कोई उपयुक्त मंच या अवसर उपलब्ध नहीं था।

3. विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण उपलब्ध कराना। इस क्षेत्र में ग्रामीण स्व–रोजगार प्रशिक्षण संस्थान एवं अन्य विभागों या संस्थानों के माध्यम से कपड़ों की सिलाई, ब्यूटी पार्लर, अगरबत्ती निर्माण, कागज या जूट के थैले का निर्माण, मशरूम का उत्पादन, उन्नत विधि से सब्जियों की खेती जैसे कई क्षेत्रों में जीविका दीदियों एवं इनके परिवार के सदस्यों या ग्रामीण क्षेत्र के अन्य युवाओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

4. इसके अतिरिक्त मनरेगा से सौ दिन का रोजगार प्राप्त कर चुके श्रमिकों के कौशल विकास एवं उन्नयत हेतु प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए उन्नति प्रोजेक्ट के तहत ऐसे श्रमिकों को उद्यमिता विकास का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इससे वे स्वरोजगार एवं उद्यमिता की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार